संगीत गायन

(छठी, सातवीं एवं आठवीं श्रेणी के लिए)

पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड
साहिबज़ादा अजीत सिंह नगर

© पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड

संस्करण 2016 ..... प्रतियाँ

All rights, including those of translation, reproduction, annotation etc. are reserved by the Punjab School Education Board.

लेखिका व अनुवादक : श्रीमती शशी अरविन्द
लेखक : श्रीमती मन्प्रीत कौर
विषय संयोजक : श्रीमती चरणप्रीत कौर
संशोधन : श्रीमती रेणु भट्टी
चित्रकार : मनजीत सिंह ढिल्लों

चेतावनी

1. कोई भी एजेंसी–होल्डर अधिक पैसे लेने के उद्देश्य से पाठ्य–पुस्तकों पर जिल्दबन्दी नहीं कर सकता। (एजेंसी–होल्डरों के साथ हुए समझौते की धारा नं० 7 के अनुसार)
2. पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित पाठ्य–पुस्तकों के जाली ओर नकली प्रकाशन (पाठ्य–पुस्तकों) की छपाई, प्रकाशन, स्टॉक करना, जमाखोरी या बिक्री आदि करना भारतीय दंड प्रणाली के अन्तर्गत गैरकानूनी जुर्म है।

   (पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड की पाठ्य–पुस्तकें बोर्ड के 'वाटर मारक' वाले कागज़ के ऊपर ही मुद्रित की जाती हैं।

मूल्य : ₹

सचिव, पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड, विद्या भवन, फेज़–8, साहिबज़ादा अजीत सिंह नगर–160062 द्वारा प्रकाशित तथा मैसर्स सहारनपुर इलैक्ट्रिक प्रैस, सहारनपुर

प्राक्कथन

पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड अपनी स्थापना के समय से ही स्कूल स्तर के सभी श्रेणियों के पाठ्यक्रम संशोधित करने और इन संशोधित पाठ्यक्रमों के अनुसार पाठ्य–पुस्तकें तैयार करने में प्रयत्नशील रहा है। राष्ट्रीय स्तर पर वर्तमान शैक्षणिक दृष्टिकोण को प्रमुख रखते हुए बोर्ड ने पाठ्य–पुस्तकों की नव–रचना का एक विशेष कार्यक्रम आरम्भ किया है। यह पुस्तक इसी प्रोग्राम की एक कड़ी है।

संगीत गायन विषय का पाठ्यक्रम कई वर्षों से पुराना ही लागू था । आधुनिक युग की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए इस विषय के पाठ्यक्रम को संशोधित करना समय की माँग थी। अतएवः प्रवेश वर्ष 2010–11 से क्षेत्रीय विषय विशेषज्ञों के सहयोग से पाठ्यक्रम का संशोधन किया गया। संशोधित पाठ्यक्रम के अनुसार प्रवेश वर्ष 2012–13 से संगीत विषय की नई पाठ्य–पुस्तकें तैयार की गई हैं।

इस्तीय पाठ्य–पुस्तक छठी, सातवीं और आठवीं श्रेणी के विद्यार्थियों के लिए तैयार की गई है। पुस्तक की विषय वस्तु को रोचक, सरल ओर स्पष्ट बनाने के लिए आवश्यक साज़ों और संगीतज्ञों के चित्र दिये गये हैं। वादन के अभ्यास हेतु क्रियात्मक रूप में ग्रहण कर सकें।

आशा है कि यह पुस्तक अध्यापकों और विद्यार्थियों के लिए लाभदायक सिद्ध होती । फिर भी पुस्तक को और अधिक उपयोगी बनाने के लिए क्षेत्र से प्राप्त सुझााव आदर सहित स्वीकार किया जायेंगे।

चेयरपर्सन
पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड

विषय सूची

प्रथम भाग

(छठी श्रेणी के लिए)

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ
1.	संगीत (गायन, वादन, नृत्य)	3
2.	अलंकार (परिभाषा)	4
3.	आरोह–अवरोह	5
4.	लय (बिलम्बित, मध्य, द्रुत)	6
5.	सप्तक (मन्द्र, मध्य, तार)	7
6.	स्वर (शुद्ध स्वर)	8
7.	पाँच अलंकार	9
8.	ताल (कहरवा, दादरा)	10

द्वितीय भाग

(सातवीं श्रेणी के लिए)

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ
1.	स्वर (शुद्ध स्वर, कोमल, तीव्र)	13
2.	नाद (आहत, अनाहत)	14
3.	वादी, संवादी, अनुवादी, विवादी वर्जित स्वर	16

क्र. सं.	विषष	पृष्ठ
4.	राग, राग के नियम	18
5.	पकड़	20
6.	श्रुति	21
7.	जीवनी : पंडित विष्णु नारायण भात्तखण्डे	23
8.	हरमोनियम की जानकारी	26
9.	भूपाली राग	28
10	दुर्गा राग	30
11	ताल (तीन ताल, रूपक)	34

द्वितीय भाग
(आठवीं श्रेणी के लिए)

क्र. सं.	विषष	पृष्ठ
1.	जाति की परिभाषा, जातियाँ (औड़व, षाड़व, सम्पूर्ण) और उपजातियाँ।	36
2.	मात्रा, विभाग, सम, ताली, खाली, आवर्तन	39
3.	वादक के गुण और अवगुण (दोष)	42

क्र. सं.	विषय	पृष्ठ
4.	थाट, नियम भात्तखण्डे जी के दस थाट	44
5.	जीवनी : पं दलीप चन्द्र बेदी	46
6.	तानपूरे की जानकारी	49
7.	भात्तखण्डे जीकी स्वरलिपि	51
8.	राग भैरवी	53
9.	राग खमाज	56
10.	ताल (एक ताल, झपताल)	59
11.	गीत लोकगीत	60
12	छठी, सातवीं और आठवीं के पाठयक्रम की सब तालों की दुगुन	64
13	रागों का चार्ट	65

प्रथम भाग

(छठी श्रेणी के लिए)

पाठ-1

संगीत (गायन, वादन, नृत्य)

स्वर ताल, शुद्ध उच्चारण, हाव-भाव और शुद्ध मुद्रा के साथ गया बजाया जाये उसे संगीत कहते हैं। संगीत शब्द गीत शब्द मे उपर्सस लगा कर बना है सं का आर्थ है अच्चा और गीत का अर्थ है गाना। संगीत गायन वादन और नृत्य के माध्यम से भाव पैदा करने वाली रचना है। इन तीनों के ही समूह को आधुनिक समय से संगीत कहा गया है। कई संगीतकार गायन को सर्वश्रेष्ठ मानते हैं । परन्तु असल में आज संगीत की तीनों कलाऐं अपने-अपने रूप में और नृत्य शास्त्रीय नृत्य सुगम नृत्य तीनों रूपों में विकसित हो रहा है।

गायन :- जिस संगीत को कण्ठ द्वारा स्वर लय और ताल के साथ गाया जाये, उसे गायन कहा जाता है।

वादन :- जिस संगीत के स्वरों को लय और ताल के साथ किसी वाद्य पर बजाया जाये उसे वादन कहते हैं।

नृत्य :- जब अपने आत्मिक भावों को तालबद्ध ढंग से शारीकि मुद्राओं के साथ प्रकट किया जाये उसे नृत्य कहते हैं।

गायन वादन और नृत्य का स्वतंत्र स्थान होने के बावजूद इन तीनों कलाओं का आपस में धनिष्ठ सम्बनध है और यह तीनों एक दूसरे पर आश्रित हैं ।

पाठ-2

अलंकार

जब स्वरों को किसी खास क्रम में रखते हुये आरोह-अवरोह के रूप में गया- बजाया जाये उस रचना को अलंकार कहते हैं। अलंकार शब्द संस्कृत का शब्द है जिसका अर्थ है आभूषण या गहना। जिस प्रकार शरीर को सजाने के लिये आभूषणों की आवश्यकता होती है उसी तरह संगीग को सजाने के लिये अलंकारों का प्रयोग किया जाता है। अलंकारों के अभ्यास से गायन की शोभा बढ़ती है।

अलंकारों के लाभ

1. अलंकारों के अभ्यास से स्वर ज्ञान बढ़ता है और लय की ठीक जानकारी मिलती है।
2. अलंकारों के अभ्यास से कल्पना शक्ति का विकास होता है।
3. अलंकारों का वाद्यो पर अभ्यास करने से माँसपेशियों को लम्बे समय ते काम करने की शक्ति मिलती है।
4. अलंकारों के अभ्यास से कण्ठ अच्छी तरह तैयार हो जाता है और गायन मे मिठास पैदा होती है।
5. अलंकारों के प्रयोग से गायन-वादन समय राग की सुन्दरता को बढ़ाया जा सकता है।

अलंकारों के इतने महत्त्व देखते हुये संगीत के विद्यार्थियों को अलंकारों का अभ्यास करना चाहिये ताकि वह उच्चकोटि के कलाकार बन सकते हैं।

******

पाठ-3

आरोह-अवरोह

आरोह :-आरोह का अर्थ हैचढ़ता क्रम अर्थात् जब हम मध्य सप्तक के स से तार सप्तक से सं क चढ़ता क्रम करते हैं उसे आरोह कहते हैं उसे आरोह कहते हैं। जैसे स से ग म प ध नी सं । इस में चढ़ता क्रम होने के कारण स्वरों की आवाज़ क्रमिक ऊँची होती जाती है।

अवरोह :-अवरोह का अर्थ हैं उतरता क्रम। तार सप्तक के सं से मध्य सप्तक के स तक जाने को अवरोह कहते है जैसे सं नी ध प म ग रे स। इनमें उतरते क्रम होने के कारण आवाज़ क्रमिक नीची होती जाती है।

गायक का वादक गाते व बजाते समय किसी विशेष स्वर पर नहीं ठहरते, ऊपर नीचे उतरते रहते हैं। इसकों संगीत की भाषा में आरोह-अवरोह कहते हैं।

* * * * * *

पाठ-4

लय

लय शब्द की उत्पत्ति 'ली' धातु से हुई है। जिसका अर्थ है लगातार चलना; या इसे और भी आसान शब्दों में कहा जा सकता है, समय की बराबर चाल को लय कहते हैं। यह लय की सारे संगीत का आधार है।

लय तीन प्रकार की मानी जाती है:

1. विलम्बित लय
2. मध्य लय
3. द्रुत लय

1. विलम्बित लय : जिस लय की गति बहुत धीमी होती है अर्थात् साधारण गति से दुगनी कम होती है उसे विलम्बित लय करते हैं।

2. मध्य लय : जो लय न ज्यादा तेज़ और न ही बहुत धीमी हो अर्थात् साधारण हो उसे मध्य लय कहते हैं। संगीत में इस लय का बड़ा महत्त्व है।

3. द्रुत लय : मध्य लय से दुगनी तेज़ और विलम्बित लय को द्रुत लय कहते हैं। इस लय से संगीत में थिरकन आ जाती है।

* * * * * *

पाठ-5

सप्तक

संगीत में प्रयोग होने वाले सात स्वरों के समूह को सप्तक कहते हैं। वह स्वर हैं:- स रे ग म प ध नी ।

आवाज़ या ध्वनि कई तरह की होती है जैसे कोई आवाज़ भारी और कोई मोटी होती है, कोई बहुत पतली और बारीक हाती है। ध्वनि के इस अन्तर को देखते हुये संगीत विद्वान सप्तक के मुख्य तीन प्रकार मानते हैं।

1. मन्द्र सप्तक :- जो आवाज़ ज्यादा नीची और भारी हो उसे मन्द्र सप्तक की आवाज़ कहते हैं। इन स्वरों की पहचान के लिये स्वर लिपि पद्धति अनुसार स्वरों के नीचे बिन्दु चिन्ह लगाया जाता हैं। जैसे रे़ ग़ म़

2. मध्य सप्तक :- इस सप्तक की आवाज़ न ज्यादा नीची होती है और न ही ज्यादा ऊँची होती है अर्थात् साधारण होती है। इस सप्तक के स्वरों की पहचान के लिए इन पर कोई चिन्ह नहीं लगाया जाता जैसे रे ग म

3. तार सप्तक :- जो आवाज़ ज्यादा ऊँची और तीखी होती है वह तार सप्तक की आवाज़ कहलाती है। यह मध्य सप्तक की आवाज़ से दुगनी ऊँची होती है। इन स्वरों की पहचान के लिये स्वर लिपि पद्धति अनुसार स्वरों के ऊपर बिन्दु चिन्ह लगाया जाता है जैसे रें गं मं।

* * * * * *

पाठ-6

स्वर

स्वर की परिभाषा :- वह संगीत उपयोगी आवाज़ जो स्पष्टऔर अपने आप में मीठी हो और सुनने वाले के मन को आकर्षित करे उसे स्वर कहते हैं।

शुद्ध स्वर :- वह स्वर जो अपने निश्चित स्थान पर रहते हैं उन्हें शुद्ध स्वर कहते हैं। इनृके नाम इस प्रकार हैं :-

स्वरों के नाम	उच्चारण में स्वरों के नाम
1. षड़ज	स
2. त्रृषभ	रे
3. गन्धार	ग
4. मध्यम	म
5. पंचम	प
6. धैवत	ध
7. निषाद	नी

इन स्वरों की पहचान के लिये स्वरो पर कोई चिन्ह नहीं लगाया जाता। इन स्वरों की प्राकृतिक स्वर भी कहते हैं।

******

पाठ-7

अलंकार

1

आरोह : से रे ग म प ध नी सं

अवरोह : सं नी ध प म ग रे स

2

आरोह : सस रेरे गग मम पप धध नीनी संसं

अवरोह : संसं नीनी धध पप मम गग रेरे सस

3

आरोह : सरेग रेगम गमप मपध पधनी धनीसं

अवरोह : संनीध नीधप धपम पमग मगरे गरेसं

4

आरोह : सरेगम रेगमप गमपध मपधनी पधनीसं

अवरोह : संनीधप नीधपम धपमग पमगरे मगरेस

5

आरोह : सरेसरेग रेगरेगम गमगमप मपमपध पधपधनी धनीधनीसं

अवरोह : संनीसंनीध नीधनीधप धपधपम पमपमग मगमगरे गरेगरेस

* * * * * *

पाठ-8

ताल (कहरवा और दादरा)

ताल कहरवा

परिचय :– यह 8 मात्रा की ताल है। इसके चार-चार मात्राओं के 2 भाग होते हैं। पहली मात्रा पर सम और ताली तथा पाँचवी मात्रा पर खाली होती है । इस ताल का प्रयोग सुगम संगीम में शब्द, भजन, लोकगीत आदि के साथ किया जाता है।

ताल कहरवा

मात्रा	1 2 3 4	5 6 7 8
बोल	धा गे न ति	ना के धि ना
चिन्ह	X	O

ताल दादरा

परिचय :– इसमें 6 मात्राएँ होती है। इसमें 3-3 मात्रा के दो भाग होते हैं। पहली मात्रा पर सम और ताली तथा चौथी मात्रा पर खाली होती है। यह ताल हल्की-फुल्की गतों और धुनों के साथ बजाई जाती है।

ताल दादरा

मात्रा	1 2 3	4 5 6
बोल	धा धि ना	धा तिं ना
चिन्ह	X	O

* * * * * *

द्वितीय भाग

सातवीं श्रेणी के लिए

पाठ-1

स्वर (शुद्ध, कोमल, तीव्र)

वह संगीत उपयोगी आवाज़ जो स्पष्ट और अपने आप में मीठी हो और जो सुनने वाले के मन को आकर्षित करे, उसे स्वर कहते है।

स्वर दो प्रकार के होते है।

1. अचल स्वर
2. चल स्वर

अचल स्वरः- जो स्वर अपने निश्चित स्थान पर स्थित रहते हैं उन्हें अचल स्वर कहते हैं। यह दो हैं स, प।

चल स्वर :-स, प को छोड़कर बाकी के स्वर जो अपने स्थान से ऊपर या नीचे की तरफ हो उन्हें चल स्वर कहते हैं। यह गिनती में पाँच है रे ग म ध नी।

शुद्ध स्वर :- चल और अचल स्वरों के अपने शुद्ध रूप को शुद्ध स्वर कहते हैं। यह गिनती में सात है; स रे ग म प ध नी। शुद्ध स्वरों की पहचान के लिये इन स्वरों पर कोई चिन्ह नहीं लगाया जाता। यह हमेशा अपने स्थान पर निश्चित रहते हैं। इनहें प्राकृतिक स्वर भी कहते हैं।

कोमल स्वर :- जब शुद्ध आवाज़ को नियत स्थान से थोड़ा नीचे किया जाता हैं। उन्हें कोमल स्वर कहते हैं। यह सिर्फ चार हैं रे ग ध नी।

स्वर लिपि में इनकी पहचान के लिये स्वरों के नीचे एक छोटी सी रेखा लगाई जाती है जो कोमल स्वरों के बारे सूचित करती है। जैसे रे ग ध नी ।

त्रीव स्वर :- जब शुद्ध म की आवाज़ को उसके नियत स्थान से थोड़ा ऊचा किया जाता हैं उसे त्रीव स्वर कहते हैं। स्वर लिपि में इनकी पहचान के लिये स्वर के ऊपर खड़ी रेखा लगाई जाती है जैसे मं

इस प्रकार कुल शुद्ध स्वर कोमल स्वर और तीव्र स्वर मिल कर कुल 12 स्वर बनते हैं।

जैसे :- स रे रे ग ग मं म प ध ध नी नी।

* * * * * *

पाठ–2

नाद

स्थिर आन्दोलन संख्या वाली मुधर ध्वनि जिस का प्रयोग संगीत में किया जाये उसे नाद कहते हैं। नाद का आर्थ है 'आवाज़'।

नाद के दो रूप माने जाते हैं:–

1. अनाहत नाद
2. आहत नाद

1. अनाहत नाद :– जो आवाज़ बिना किसी आघात (चोट) के पैदा हो उसे अनाहत नाद कहते हैं जैसे, अगर हम अपनी उँगलियों को कानों में डालें और जो सांय–सांय या सनसनाहट सुनाई देती हैं। उसे अनाहत नाद कहते हैं। यह ध्वनि संगीत उपयोगी नहीं हैं। यह केवल योग– साधना के लिये ही है।

2. आहत नाद :– आहत का शाब्दिक अर्थ है 'चोट'। जो आवाज़ किसी चोट, रगड़ स्पर्श आदि से पैदा हो उसे आहत नाद कहते हैं। इसे संगीत उपयोगी ध्वनि कहा जा सकता है। इसे इस प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है:–

1. जब किसी वस्तु को दूसरी वस्तु से आघात या चोट किया जाये जैसे तबला, ढोलक, नगाड़ा आदि हाथ आदि की चोट से जो आवाज़ उत्पन्न होती है उसे आहत नाद कहते हैं।

2. जब किसी संघर्ष, या रगड़ से जो आवाज़ निकले जैसे वायलिन सांरगी आदि गज़ से, सितार पर मिजराब से, उसे आहत नाद कहते हैं।

3. जब किसी वस्तु में हवा प्रवेश करती है या स्पर्श करती है जैसे शहनाई, बीन, बांसुरी, हारमोनियम आदि हवा से और इसी प्रकार जब मुनष्य के कण्ठ में हबा प्रवेश कर गले की माँसपेशियों से कम्पित होती हैं। वह आवाज़ आहत नाद कहलायेगी।

******

पाठ-3

वादी स्वर

वादी स्वर

राग में प्रयोग होने वाले स्वरों में कुछ ऐसे स्वर होते हैं जिसमें राग का स्वररूप कायम करनें में विशेष योगदान होता है। राग का विस्तार करते ऐसे स्वर जिनका प्रयोग बार-बार और जिन पर अधिक ठहराव किया जाये उसे वादी स्वर कहते हैं। वादी स्वर का सबसे अधिक प्रयोग होने के कारण इसको जीव स्वर, अंश स्वर, प्रधान स्वर, मुख्य स्वर और राग का राजा स्वर इत्यादि नामों से सम्बोधन किया जाता है और इसलिये राग का आरम्भ और समाप्ति इसी वादी स्वर पर होती है जैसे भुपाली राग में वादी स्वर गन्धार 'ग' है।

सम्वादी स्वर

राग का दूसरा महत्त्वपूर्ण स्वर सम्वादी कहलाता है। इसका प्रयोग वादी स्वर के कुछ कम पर बाकी स्वरों से ज्यादा किया जाता है। सम्वादी स्वर को वादी स्वर का परम सहायक होने के कारण इसे मन्त्री की उपाधि दी गई है। जैसे भुपाली राग में सम्वादी स्वर (धैवत 'ध') हैं।

अनुवादी स्वर

राग में सिर्फ वादी सम्वादी इन दो स्वरों से राग का स्वरूप नहीं बनता। इसलिये वादी और सम्वादी के साथ-साथ अनुवादी स्वर का राग में होना अतिआवश्यक है। वादी सम्वादी स्वरों के अतिरिक्त जो स्वर राग

में प्रयोग किये जाते हैं उन्हें अनुवादी स्वर कहते हैं। जैसे एक राज्य में राजा और मन्त्री के अतिरिक्त प्रजा का होना आवश्यक है उसी प्रकार एक राग मे ंवादी सम्वादी के इलावा अनुवादी स्वरों का भी उतना ही महत्त्व है जैसे भुपाली राग में ग और ध के इलावा बाकी स्वर अनुवादी कहलाते हैं।

विवादी स्वर

विवादी स्वर का साधारणत: राग में प्रयोग नहीं किया जाता। इस के प्रयोग से राग की शुद्धता विगड़ने का भय होता है पर यह स्वर सिर्फ राग में विचित्रता और रंजकता बढ़ाने के लिये और बहुत थोड़े समय के लिए कभी- कभी राग में उचित स्थान पर प्रयो किये जाते हैं। इनका प्रयोग बड़ी सावधानी से किया जाना चाहिये, नहीं तो राग का स्वरूप विगड़ने का भय होता है। इन स्वरों को 'झगड़ालू' स्वरों की उपमा दी गई है।

वर्जित स्वर

वर्जित कर अर्थ है 'मनाही'। जिन स्वरों को राग में प्रयोग करने की बिल्कुल मनाही हो अर्थात् वर्जित हो उन्हें स्वर कहते हैं, जैसे भुपाली राग में 'म' 'नी' वर्जित स्वर है। विवादी, स्वर राग में कभी- कभी सुन्दरता के लिये प्रयोग किया जा सकता है परन्तु वर्जित स्वर कभी भी प्रयोग नहीं किया जा सकता।

* * * * * *

पाठ-4

राग, राग के नियम

राग :- राग शब्द का जनम रन्जू धातू से माना गया है। जिस का अर्थ है प्रसन्न करना। वह आवाज़ (ध्वनि) जो स्वरों और वर्णों से विभूषित हो और मनुष्य के मन को आन्नदिन करे और जिस में कम से कम पाँच और अधिक से अधिक सात स्वर हों उस रचना को राग कहते हैं।

अभिनव राग मन्जरी में राग इस प्रकार है :-

''स्वर और वर्ण से विभूषित ध्वनि जो मनुष्य के मन का रंजन करे, राग कहलाती है।''

राग के नियम :-

1. राग मे रन्जकता का होना आवष्यक है।
2. राम में कम से कम पाँच और अधिक से अधिक सात स्वर होने चाहिये ।
3. राग में 'स' स्वर कभी भी वर्जित नहीं होना चाहिये क्योंकि यह सपतक का आधार स्वर है।
4. राग में 'म' और 'प' स्वर एक साथ वर्जित नहीं होते, अगर किसी रात मे 'प' स्वर वर्जित है तो म स्वर अवश्य होगा।
5. राग में आरोह अवरोह थाट, जाति, वादी सम्वादी, पकड़ , समय आदि का होना आवश्यक है।

6. राग किसी थाट से उत्पन्न होना चाहिये।

7. राग में स्वरों के दोनों रूप (कोमल तीव्र) एक साथ नहीं प्रयोग करने चाहिये।

8. राग में स्वर क्रम अनुसार नहीं होते।

* * * * * *

पाठ-5

पकड़

वह स्वर-समूह जिस से किसी राग की पहचान हो, बोध हो उस को पकड़ कहते है। जैसे भुपाली राग की पकड़ है:- पग, रेग स रे ध़ स । पकड़ राग के आरोह- अवरोह के बाद गाई या बजाई जाती है। हरेक राग की पकड़ अलग-अलग होती है। गाते - बजाते समय राग की पकड़ राग में बार- बार प्रयोग करते है। पकड़ को (I) राग का मुख्य अंग भी कहते हैं।

जैसे राग भुपाली की पकड़ हैं।

ग रे स, सा ध़ सा रे ग, प ग, ध प ग रे स

इस पकड़ से हम पहचान जोते हैं कि यह भुपाली राग है ।

* * * * * *

पाठ-6

श्रुति

वह सुक्ष्म आवाज़ जिसे हम स्पष्ट रूप से सुनकर समझ सकें और अलग से पहचान सकें उसे श्रुति कहते हैं।

शास्त्रकारों ने इन की परिभाषा इस प्रकार दी है।

श्रूयते इतिश्रुति

अर्थात् वह आवाज़ जिसे हम सुन सकें और समझ सकें उसे श्रुति कहते हैं।

'अभिनव राग मन्जरी' में भी इस की परिभाषा इस प्रकार दी गई है, 'वह आवाज़ जो गीत में प्रयोग की जा सके और एक दूसरे से अलग पहचानी जा सके उसे श्रुति कहते है। अर्थात श्रुति वह ध्वनि है जो संगीत के लिए उपयोगी हो, कानों को साफ़ सुनाई पड़े, एक दूसरे से अलग पहचनानी जा सके और सुनने में मधुर हो।'' बाईस श्रुतियों क नाम निम्नलिखित हैं।

1. तीव्रा	2. कुमुदवती	3. मन्दा	4. छन्दोवती
5. दयावती	6. रंजनी	7. रूतिका	8. रोद्री
9. क्रोधी	10. वज़िका	11. प्रसारिणी	12. प्रीति
13. गार्जनी	14. क्षिति	15. रन्ता	16. संदीपनी
17. आलापनी	18. मदन्ती	19. रौहिणी	20. रम्या
21. उग्रा	22. क्षोभणी		

बाईस श्रुतियों का गायन वादन में प्रयोग कठिन है। अत: इन बाईस श्रुतियों में से सात को चुना गया और इन्हें स्वर का नाम दिया गया। भारतीय संगीत इन सात स्वरों पर ही आधारित है।

* * * * * *

पंडित विष्णु नारायण भात्तखण्डे

(1860-1936)

चित्र न. 1

पाठ- 7

पंडित विष्णु नारायण भात्तखण्डे

पंडित विष्णु नारायण भात्तखण्डे जी ने संगीत कला की प्रगति हेतु स्तंभ की भुमिका निभाई। उन्होनें अपना सारा जीवन संगीत कला की निष्काम सेवा करते हुये हमेशा के लिये संगीत प्रेमियों के हादय में अपना नाम अंकित कर दिया। संगीज जगत अच्छे बहुमूल्य कार्यो के लिये उनका सदा के लिए उनका ऋणी रहेगा।

श्री विष्ण नारायण भात्तखण्डे का जन्म 10 अगस्त सन् 1860 ई: को बम्बई प्रांत के बालकेश्वर नामक स्थान में कृष्ण जन्माष्टमी के दिन हुआ था। उन्होंने अपने पिता से जिन्हें संगीत से विशेष प्रेम था संगीत सीखने की प्रेरणा मिली आप स्कूली शिक्षा के साथ-साथ संगीत शिक्षा भी ग्रहण करते रहे । सितार, गायन और बाँसुरी की शिक्षा प्राप्त की और तीनों पर अच्छा अभ्यास किया। सेठ बल्लमदास से सितार, गुरू राव बुआ बेलबाथकर, जयपुर के महम्मद अली खाँ, गवालियर के पं० ऐक नाथ आदि गुरूजनों से गायन सीखा। सन् 1883 में बी.ए., सन् 1890 में एल. एल. बी. की परीक्षाएँ पास की । कुछ समय तक आप बकालत भी करते रहे किन्तु संगीत के महान प्रेमी का मन बकालत करने में नहीं लगा।

सन् 1904 में भात्तखण्डे जी ने पहली संगीत यात्रा की। उन्होंने सबसे पहले दक्षिण की यात्रा की। वहाँ उन्होंने बड़े-संगीतकारों से विचार-विमर्श किया और दुर्लभ प्राचीन ग्रन्थों का अध्ययन किया। इन्होनें उत्तरी भारत का दौरा किया वहाँ भी संगीतकारों से ज्ञान-गोष्ठियां की और प्राचीन ग्रन्थों का अध्ययन किया। विभिन्न रागों के बहुत से गीत इकट्ठे

किये और उन के स्वरलिपियाँ भात्तखण्डे क्रमिक पुस्तक '6' भागों में संग्रहित कर संगीत के लिये अथाह भण्डार इकट्ठे किए।

क्रियात्मक संगीत के लिपिबद्ध करने के लिये भात्तखण्डे जी ने सरल और नवीन स्वरलिपि पद्धति की रचना की जो भात्तखण्डे स्वर लिपि पद्धति के नाम से प्रसिद्ध है। इसके राग वर्गीकरण एवं नवीन प्रकार थाट-राग वर्गीकरण के प्रचारित करने का श्रेय भात्तरखण्डे जी को है। उन्होनें वैज्ञानिक ढंग से सभी रागों को 10 थाटों में विभाजित किया।

जिस समय भारत में रेडियो का प्रचार नहीं था उस समय भात्तखण्डे जी ने 1916 में बड़ौदा नरेश की सहायता से एक विशाल संगीत सम्मेलन करवाया। इन्होंने कोई संगीत- विद्यालयों की स्थापना की उन में से मुख्य हैं मैरिस म्युजिक कालेज लखनऊ, माधव संगीत विद्यालय गवालियर।

उन्होंने कई पुस्तकों की रचना भी की। हिन्दोस्तानी संगीत पद्धति (क्रमिक पुस्तक मालिका 6 भागों में) भात्तखण्डे संगीत शास्त्र 4 भागों में, अभिनव राम मन्जरी, लक्ष्य संगती, स्वर मालिका।

इसके अतिरिक्त पण्डित जी ने अनेक ख्याल गीतों की रचना, हररंग उपनाम से की, 250 के लगभग लक्षण गीतों की रचना 'चतुरपडिंत' उपनाम से की।

संगीत शास्त्र, क्रियात्मक संगीत, खोज प्रचार एवं संगीत शिक्षा प्रत्येक में भात्तखण्डे जी ने सराहनीय कार्य किया है। इस महान संगीतकार ने अपना सारा जीवन संगीत के लिये जितना कार्य किया उसका कोई अन्य उदाहरण मिलना कठिन है।

सन् 1933 में हुए पक्षाघात के रोग से तीन वर्ष तक बीमार रहे और 19 सितम्बर सन् 1936 को उनका स्वर्गवास हो गया। देश में संगीत के विद्यार्थी और प्रेमी हर वर्ष उन की स्मृति में यह दिन मनाते हैं। संगीत जगत सदा उनका ऋणी रहेगा।

* * * * * *

हारमोनियम

चित्र न० 2

पाठ- 8

हारमोनियम

हारमोनियम एक बहुत लोकप्रिय पाद्य है। हल्के-फुलके संगीत के लिये हारमोनियम जैसा लाभदायिक शायद ही कोई दूरसरा पाद्य है। गज़ल और कव्वाली की तो हारमोनियम के बिना कल्पना भी नहीं की जा सकती। इसको बाजा या पेटी भी कहते हैं। शास्त्रीय संगीत में इस वाद्य का प्रयोग स्वर भरन के लिये किया जाता हैं। हारमोनियम को जन साधारण का कहना उचित होगा क्योंकि इस वाद्य ने उत्तरी भारत में सुगम संगीत ही नहीं बल्कि शास्त्रीय संगीत के प्रचार में काफी योगदान डाला है। भजन शब्द-कीर्तन और कथा वार्ता आदि संगीत में हारमोनियम का बहुत प्रयोग होती है। मूलरूप में यूरोपियन वाद्य होने के बावजूद हारमोनियम भारतीय वाद्यों में पूर्णरूप से घुल मिल गया है।

अंग वर्णन

1. **परदा :-** इसे चाबी भी कहते हैं। परदों को दबाने से स्वर उत्पन्न होते हैं।

2. **धौंकनी :**-इसको दबाने से हारमोनियम में हवा भरती है। यह हारमानियम के पिछले भाग मं लगाई जाती है इसे बायें हाथ से चलात हैं।

3. **रीड :**-हारमोनियम के अन्दर लगी हुई पीपल की छोटी-छोटी पत्तियाँ रीड कहलाती हैं। परदा दबाने से रीड को छू कर हवा बाहर निकलती है और स्वर पैदा करती है।

4. **रीड बोर्ड :**-यह लकड़ी की एक लम्बी पटट्री होती है। सि पर रीड लगाये जाते हैं।

5. **स्टारपर :**-हारमोनियम के आग लगी हुई खुँटियों को स्टापर कहते हैं। स्टापर को बाहर खीं कर खोलने से हारमोनियम से आवाज़ निकलती है।

6. कमानी :-परदे के पिछले तरफ मकानियाँ लगी होती हैं। यह परदे को दवा कर रखती है। परदा ऊँगली को दबाने से रीड की छिद्र खुल जाता है और स्वर निकलता है। ऊँगली उठा लेने पर कमानी स्प्रिंग का काम करती है, परदा अपनी जगह वापिस आ जाता है और रीड का छिद्र फिर से बन्द हो जाता है।

6. किश्ती :-रीड बोर्ड के नीचे एक तख्ती होती है। इस तख्ती पर स्टापर लगे होते हैं। स्टापर बाहर खीचँने से धौंकनी की हवा किश्ती मे आने लगती है। स्टापर बन्द करने पर यह हवा किश्ती से निकलती बन्द हो जाती है।

* * * * * *

पाठ- 9

राग भूपाली

थाट - कल्याण
वादी - गंधार (ग)
संवादी - धैवत (ध)
जाति-औड़व-औड़व
जाति - औड़व-औड़व
गायन समय-रात्री का प्रथम प्रहर

संक्षिप्त परिचयः

राग भूपाली कल्याण थाट का जन्म राग है इस राग में समस्त स्वर शुद्ध लगते हैं इस राग में म और नि स्वर वर्जित होने के कारण इसकी जाति औडव औडव मानी गई है इसका वादी गंधार और संवादी धैवत है इस राग का गायन समय रात्रि का प्रथम प्रहर है।

इस राग के थाट के बारे में मतभेद है कुछ विद्वान इसे बिलावल थाट का भी मानते हैं क्योकि इस राग में म (तीव्र) और निषाद स्वर दोनों ही वर्जित हैं।

आरोह स रे ग प ध सं
अवरोह सं ध प ग रे स
पकड़ ग रे स ध़, स रे ग , ग ध, प ग रे स।

आलाप :- 1. स रे---- स ध़ ----प़ ध़ -- स रे ग ----रे स ।
2. ग रे ग प ध ---- प ----ग ध प -- स रे ग ।

गीत (भजन)

स्थाई :- गुरू तोरे चरण कमल पर वारी
बार बार जाऊँ बलिहारी

अंतरा :- ब्रह्म विष्णु महेशहु पूजा
ईश्वर से भी बढ़ महिमा न्यारी

राग भूपाली (छोटा ख्याल)

स्थाई

.....

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
ध	सं	ध	प	ग	रे	स	रे	ध	ध	स	रे	ग	रे	ग	--
गु	रू	तो	रे	च	र	ण	क	म	ल	प	र	वा	ऽ	री	ऽ
ग	रे	स	ध़	स	रे	ग	प	ध	स	ध	प	ग	रे	स	--
बा	ऽ	र	बा	ऽ	र	जा	ऽ	ऊँ	ऽ	ब	लि	हा	ऽ	री	ऽ

अंतरा

ग	प	ध	प	ध	ध	सं	सं	ध	ध	सं	सं	रें	रें	सं	--
ब्र	ऽ	ह्म	ऽ	वि	ऽ	ष्णु	म	हे	ऽ	श	हु	पू	ऽ	जा	ऽ
सं	गं	रें	सं	ध	ध	प	ध	ध	सं	ध	प	ग	रे	स	--
ई	ऽ	श्व	र	से	भी	व	ढ़	म	हि	मा	ऽ	न	य	ऽ	री

ताने

गु	रू	तो	रे	च	र	ण	क	(1)	सरे	गप	धप	गप	धप	गय	गरे स-।
-	-	-	-(2)	-	-	-	-2		गरे	सध़	सरे	गप	धप	गप	गरे स-।
ग	रू	तो	रे 3)	गरे	गरे	गरे	सरे		सरे	गप	धप	गप	धप	गप	गरे स-।

राग भूपाली

हम अवगुण भरे ऐक गुण नाहि॥

अमृत छाडि विखे बिरख खाई॥

माया मोह भ्रम पे भूले सत दारा सिऊ प्रीत लगाई॥

ईक उत्तम पंथ सुनियो गुर संगत, तिह मिलंन जम व्रास मिटाई॥

एक अरदास भाट कीरत की, गुरु रामदास राखो सरणाई॥

राग भूपाली **तीन साल**

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
स्थाई								सं	-	ध	प	ग	रे॒	स	रे
								गु	ऽ	रा	मि	दा	ऽ	स	रा
ध	-	स	रे॒	ग	रे	ग	-	रे	-	रे	-	रे	-	स	रे॒
ख	ऊ	स	र	ना	ऽ	ई	ऽ	ई	क	अ	र	दा	ऽ	सि	भा
ग	प	ग	रे	ग	रे	स	ऽ								
ऽ	टि	की	ऽ	र	ति	की	ऽ								
अंतरा								ग	—	ग	ग	प	-	ध	-
								हम	ऽ	अव	गुण	भ	ऽ	ङ	ऽ
सं	-	सं	-	ध	रे	सं	-	स	रे	गं	रें	सं	धं	प	ध
ऐ	क	गु	ण	ना	ऽ	ही	ऽ	अं	मृ	त	ऽ	छा	ऽ	डि	बि
सा	-	सं	-	ध	रें	स	-	सं	रें	गं	रें	स	ध	प	ध
खै	ऽ	बि	ख	खा	ऽ	ई	ऽ	अं	मृ	त	ऽ	स	ऽ	डि	बि
सं	-	सं-		धसं		धप	गरे	स-							
खै	ऽ	बि	ख	खा		ऽऽ	ईऽऽऽ								

(शेष अन्तरे पहले अन्तरे के समान गाइए)

पाठ-10

राग दुर्गा

थाट-बिलावल

वादी-मध्यम

संवादी-षड़ज

जाति -औड़व-औड़व

गायन समय- रात्रि का दूसरा पहर

संक्षिप्त परिचय :

राग दुर्गा थाट बिलावल का जन्य राग है इसमें समस्त स्वर शुद्ध लगते हैं। इसमें गंधर ग निषाद नि स्वर वर्जित होने के कारण इस राग की जाति औडव-औडव मानी गई है। इस राग का वादी मध्यम, संवादी षडज है। इसका गायन समय रात का दूसरा पहर है।

आरोह स रे म प ध सं

अवरोह सं ध प म रे स

पकड़ स रे म प म रे ध़ स।

आलाप :- 1. स रे ---म ----म ---- रे स ध़ ध़ स रे स ।

2. स रे म ----म ---ध ---सं ध प --- म प म रे ध़ स ----।

गीत (भजन)

स्थाई : लागी लगन मोहे श्याम सुंदर से

मुरली मनोहर श्री गिरधर से

अंतरा : लो लाज कुल मर्यादा तजि

हाथ बिकानी राधा वर के।

छोटा ख्याल राग दुर्गा मध्य लय तीन ताल

स्थाई

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
म	प	ध	प	म	रे	स	रे	म	–	प	रे	रे	रे	स	–
ला	ऽ	गी	ल	ग	न	मो	हे	श्या	–	म	सुं	द	र	से	ऽ
म	रे	स	ध़	स	रे	म	प	ध	–	म	प	म	रे	स	–
मु	र	ली	म	नो	ऽ	ह	र	श्री	ऽ	गि	र	ध	र	से	ऽ

अंतरा

म	म	प	प	सं	ध	सं	सं	सं	सं	सं	सं	रे	ध	सं	सं
लो	ऽ	क	ला	ऽ	ज	कु	ल	म	र	या	ऽ	दा	ऽ	त	जि
ध	सं	रें	सं	ध	सं	ध	प	म	–	ध	प	म	रे	स	–
हा	ऽ	थ	बि	का	ऽ	नी	ऽ	रा	ऽ	धा	ऽ	व	र	कें	ऽ

तानें

ला	ऽ	गी	ल	ग	न	मोहे	1.	सरे	मप	धसं	रेसं	रेसं	धप	मरे	स–
–	–	–	–	–	–	–	(2)	मरे	सध़	सरे	मप	धप	मप	मरे	स –

राग दुर्गा

गुर के चरन जी का निसतारा॥ समुंदु सागर जिन खिन महि तारा॥ रहाऊ॥ कोई होआ क्रम रतु, कोई तीर्थ नाइया॥ दासी हरि का नाम ध्याया॥ बंधन काटन हार स्वामी॥ जन नानक सिमरै अंतरजामी॥

				राग भूपाली				तीन ताल							
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
स्थाई								धं	स	ध	म	म	रे	स	रे
								गु	र	के	ऽ	च	र	न	जीअ
प	प	प	प	ध	म	प	–	ध	सं	ध	प	ध	म	प	प
का	ऽ	नि	स	त	ऽ	रा	ऽ	स	मुं	द	सा	ग	र	जि	न
धप	मप	धसं	धप	मप	धप	मरे	स								
स्वि	निऽ	मऽ	हि	ना	ऽऽ	रा ऽ	ऽ								
अंतरा								म	म	प	प	ध	–	प	ध
								को	ई	हो	आ	क्र	म	र	तु
सं	–	सं	–	रे	ध	सं	सं	सं	ध	सं	रे	सं	ध	प	प
को	ई	ती	र्थ	ना	ऽ	इ	या	दा	ऽ	सी	ऽ	ह	रि	का	ऽ
म	प	ध	प	म	रे	स	–								
ना	ऽ	म	ध	या	ऽ	या	ऽ								

(शेष अन्तरे पहले अन्तरे के समान गाइए)

पाठ-11

तीन ताल

ताल की जान-पहचानः-

तीन ताल की 16 मात्राएँ हैं । इस को त्रीताल भी कहते है। इसके 4-4 मात्राओं के चार विभाग होते हैं। इस में 1, 5, 13 वीं मात्रा पर क्रमवार पहली दूसरी और तीसरी ताली है। तीन ताल की 9वीं मात्रा पर खाली है। यह तबले कीताल है। यह ताल गीत, शब्द और शास्त्री संगीत के साथ बजाई जाती है।

मध्य लय				तीन ताल											
मात्रा	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
ताल के बोल	धा	धिं	धिं	धा	धा	धिं	धिं	धा	धा	तिं	तिं	ता	ता	धिं	धिं	धा
चिन्ह		×			2				0				3			

रूपक ताल

ताल की जान-पहचानः- रूपक ताल की कुल सात मात्राएँ हैं। इन मात्राओं हम तीन भागों में बाँटते हैं। पहले भाग में 3 मात्राएँ दूसरे और तीसरे भाग में दो-दो मात्राएँ होती हैं। पहली मात्रा पर सम या खाली चौथी पर पहली ताली और छठी पर दूसरी ताली होती है। यह ताल ख्याल, गीत, गज़ल आदि के साथ बजाई जाती हैं।

रूपक ताल

मात्रा	1	2	3	4	5	6	7
बोल	तिं	तिं	ना	धिं	ना	धिं	ना
चिन्ह	0			2		3	

तृतीय भाग

(आठवीं श्रेणी के लिए)

पाठ-1

जाति की परिभाषा

(औड़व, षाड़व, सम्पूर्ण)

जाति :-सप्तक के सात स्वरों में से जितने भी स्वर राग में लगते हैं उनके प्रयोग से जाति निंधारित होती है क्योंकि किसी राग में कम से कम 5 स्वर और अधिक से अधिक 5 स्वर लगते हैं। इन स्वरों की भिन्न-भिन्न गिनती ही जाति कहलाती है। जाति से हमें यह पता चलता है कि किसी राग में कितने स्वर लगते हैं। राग में प्रयोग होन वाले स्वरों की विभिन्न गिनती के आधार पर मुख्य तीन जातियाँ मानी जाती हैं :-

1. सम्पूर्ण जाति
2. षाड़व जाति
3. औड़व जाति

1. सम्पूर्ण जाति : - जिस राग में पूरे के सात स्वरों का प्रयोग हो उसे सम्पूर्ण जाति का राग कहते हैं।

2. षाड़व जाति : - जिस राग में सप्तक के सात स्वरों में से एक स्वर वर्जित करके छः स्वर प्रयोग हो उसे षाड़व जाति का राग कहते है।

3. औड़व जाति : - जिस राग में सप्तक के कोई दो स्वर वर्जित करके कोई भी पाँच स्वर प्रयोग हो उस राग को औड़व जाति का राग कहते है।

इन तीन मुख्य जातियों के अतिरिक्त आरोह अवरोह के आधार से राग में प्रयोग होने वाले स्वरों की गिनती के आधाार पर कुल 9 उपजातियाँ बनती हैं।

1. सम्पूर्ण - औड़व जाति
2. सम्पूर्ण - षाड़व जाति
3. सम्पूर्ण - सम्पूर्ण जाति
4. षाड़व - औड़व जाति
5. षाड़व - षाड़व जाति
6. षाड़व - सम्पूर्ण जाति
7. औड़व - औड़व जाति
8. औड़व - षाड़व जाति
9. औड़व - सम्पूर्ण जाति

1. **सम्पूर्ण - औड़व जाति :** जिस राग के आरोह में पूरे सात स्वर और अवरोह में कोई पाँच स्वर लगें उसे सम्पूर्ण-औड़व ाजती का राग कहते है।

2. **सम्पूर्ण - षाड़व जाति :** जिस राग के आरोह में पूरे सात स्वर और अवरोह के बीच छः स्वर लगें उसे सम्पूर्ण-षाड़व जाति का राग कहते हैं।

3. **सम्पूर्ण - सम्पूर्ण जाति :**जिस राग के आरोह-अवरोह में सात-सात स्वर लगे हों। उसे समपूर्ण- सम्पूर्ण जाति का राग कहते हैं।

4. **षाड़व - औड़व जाति :**जिस राग के आरोह में छः स्वर और अवरोह में पाँच स्वर लगे उसे षाड़व-औड़व जाति का राग कहते हैं।

5. **षाड़व - षाड़व जाति :**जिस राग के आरोह-अवरोह में छ:छ: स्वरों का प्रयोग हो, उसे षाड़व-षाड़व जाति का राग कहते हैं।

6. **षाड़व-सम्पूर्ण :**जिस राग के आरोह में छ:स्वर और अवरोह में सात स्वर लगें उसे षाड़व-सम्पूर्ण जाति का राग कहते हैं।

7. **औड़व-औड़व :**जिस राग के आरोह-अवरोह में पाँच-पाँच स्वरों का प्रयोग हो उसे औड़व-औड़व जाति का राग कहते है।

8. **औड़व-षाड़व :**जिस राग के आरोह पाँच स्वर और अवरोह में छ: स्वरों का प्रयोग हो उसे औड़व-षाड़व जाति का राग कहते हैं।

9. **औड़व-सम्पूर्ण :**जिस के आरोह में पाँच स्वर और अवरोह में पूरे सात स्वर लगें उसे औड़व- समपूर्ण जाति का राग कहते हैं।

* * * * * *

पाठ-2

परिभाषा

मात्रा

संगीत में समय के माप का सबसे छोटा पैमाना मात्राा है। जिस प्रकार तौल नापने के लिये ग्राम, किलोग्राम लम्बाई नापने के लिए मीटर, सैंटीमीटर समय नापने के लिये घण्टा, मिनट, सैंकिण्ड आदि है, उसी प्रकार संगीत के समय नापने के लिये मात्रा बनाई गई है। संगीत में मात्रा एक ऐसी इकाई है जिसके माध्यम से ताल को मापा जा सकता है। मात्राओं के बीच का समय अपनी गायन वादन इच्छा अनुसार कम या ज्यादा कर सकते हैं। हरेक ताल की अलग-अलग मात्राायें होती हैं जैसे कहरवा ताल की आठ, तीन ताल की 16 मात्रायें होती है।

सम

जिस मात्राा से ताल आरम्भ की जाती है उसे सम कहते हैं। ताल का सम ताल की पहली मात्राा पर होता है। ताल में सम का विशेष महत्तव होता है और इस पर विशेष प्रकार का ज़ोर दिया जाता है। जिससे और मात्राओं में अलग पहचान हो जाती हैं। किसी भी गायन या वादन के साथ ताल की संगति सम के प्रारम्भ और समाप्ति भी सम पर ही की जाती है। सम की पहचान के लिये तालिपि में (×) का चिन्ह लगाया जाता है।

विभाग

हरेक ताल के बोलों को आसानी के लिए कुछ छोटे-छोटे भागों में बाँट लिया जाता है उसे विभाग कहा जाता है जैसे तीन ताल को सोलह मात्राओं के एक पूरे आर्वतन (चढर)का चार- चान मात्रा के चार भागों में बाँटा गया है। इस प्रकार तीन ताल के चार विभाग हुये। प्रत्येक ताल के विभागों और प्रत्येक विभाग की मात्राओं की संख्या निश्चित होती है। विभाग का उद्देश्य यह है कि गायक या वादक का हाथ से ताल देते समय यह पता चलता है कि यह ताल की किस मात्रा पर है।

ताली

जब हम हाथ के साथ कोई ताल बजाते हैं या गायन वादन में हाथ के साथ ताल देते है, उस समय जो ताली बजाते हैं उस को ताली कहते हैं। किसी एक ताल में कई तालियाँ होती हैं जैसे तीन ताल में, 1,5, 13वीं मात्रा पर ताली आती है। ताली ताल के हर विभाग के पहली मात्रा पर होती है। ताल में सम के अतिरिक्त वाली को ज़ोर से बजा कर दिखाया जाता है। पर सम से कुछ कम दबाव से दिखाते हैं। ताली को भरी भी कहते हैं। लिखने में ताली का चिन्ह 2, 3,4 आदि संख्या का प्रयोग करते हैं।

खाली

जब हम ताल बजाते समय जैसे ताली आने पर ताल बजाते हैं या आवाज़ करते हैं उस के उलट खाली पर हम हाथ को हल्का सा हवा में झटक देते हैं। अर्थात आवाज़ नहीं करते वह खाली होगी। खाली का स्थान आमतौर पर ताल की मात्राओं के बीच में होता है।

जैसे तीन ताल में 9वीं मात्रा पर खाली है। ताल में लिपि लिखते समय खाली को 'O' के चिन्ह से दिखाया जाता है।

आवरतरण (आर्वतन)

जब किसी ताल को बजाते हुये उस की पूरी मात्रायें बजा कर फिर सम पर आते हैं, उसे आवरतन कहते है। जैसे तीन ताल की 16 मात्राायों को एक बार पूरा बजाने को एक आवरतन कहेगें। जैसे घड़ी की सुईयाँ 12 बजा कर अपना पूरा चक्कर करके फिर 12 बजे तक पहुँचे, एक आर्वतन या चक्कर कहलायेगा। गाने बजाने के साथ-साथ वह आर्वतन चलता रहता है। जब तक गाना-बाजाना खत्म नहीं होता, ताल का आर्वतन चलता रहता है ।

* * * * * *

पाठ–3

गायक के गुण और दोष

संगीत का सीधा सम्बन्ध श्रोतायों को आन्नद देना होता है। जब कोई भी गायक वादक या नृत्यकार अपनी कला द्वारा श्रोतायों को प्रसन्न करता है तभी वह कुशल संगीतकार कहलाता है। किसी भी काम को ठीक ढंग से करने के कुछ नियम होते है। जिनके आधार पर कोई भी काम ठीक ढंग से पेश किया जा सकता हैं क्योंकि समय और स्थान के परिवर्तन से कोई भी गुण दोष बन सकता है। एक साधारण गायक श्रोताओं पर तभी प्रभाव डाल सकता है जब उसे लय ताल का पूरा ज्ञान होगा। आज के विद्यार्थी जल्दी ही मंच पर मशहूर होने के लिये गायन के हर अंग का प्रयोग मनमर्जी से करते हैं। गायक को गायन के गुण–दोषों की तरफ ध्यान देना चाहिये और दोष छोड़ देने चाहियें।

गायक के गुणः–

1. जिस की आवाज़ में मधुरता और सुरीलापन हो।
2. जो संगीत से सम्बंधित ज्ञान और उसके क्रियात्मक रूप की जानकारी रखने वाला हो।
3. जो गायन और वादन के सारे अंगो और शैलियों का ज्ञान रखने वाला हो।
4. जो स्वरों के शुद्ध कोमल तीव्र रूपों का ज्ञान रखने वाला हो।
5. गायक को राग पेश करते समय राग का पूर्ण ज्ञान होना चाहिये।

6. जिसे अपनी आवाज़ पर पूरा अधिकार हो, सभी सप्तकों का सफलता प्रयोग कर सके।
7. जो अपने संगीत के साथ भाषा और सहित्य का ज्ञान रखने वाला और शुद्ध शब्द उच्चारण करने वाला हो।
8. जो मेहनती और साधना करने वाला और मंच पर निडर हो कर बैठ सकता है।

दोष : जिस गायक में ऊपर लिखित गुण न हो वह उसके दोष माने जाते हैं।

गायक के दोष

1. दांत पीसकर गाना
2. जिसके गायन में नीरसता हो
3. डरते-डरते गाना
4. कांपती आवाज़ या मुंह फाड़कर गाना
5. स्वरों का ठीक जगह पर न लगना बेसुरा हो जाना
6. बेताला गाना, गले की नसें फूलाकर गाना
7. मुंह टेढ़ा और पैर पटक कर गाना
8. गाते समय वर्जित स्वरों का प्रयोग करना
9. शब्द उच्चारण ठीक न होना
10. भयानक मुंह खोलकर गाना
11. नाक से ध्वनि निकाल कर गाना

* * * * * *

पाठ-4

थाट

सात स्वरों का वह समूह जिस में राग पैदा करने की शक्ति हो, उसे थाट कहते हैं। थाट को मेल भी कहा जाता है।

अभिनव राग मन्जरी में इस की परिभाषा इस प्रकार है:- मेल या थाट स्वरों के उस समूह को कहते हैं जिसमें राग पैदा करने की शक्ति हो।

लक्षण या नियम :-

1. हरेक थाट में हमेशा सात स्वर होने चाहियें।
2. थाट में स्वर हमेशा क्रम में होने चाहियें जैसे स रे ग म प ध नी।
3. थाट सम्पूर्ण होने के कारण आरोह से ही किसी थाट का पता चल सकता हैं। इसलिये अवरोह की आवश्यकता नहीं है।
4. थाट में एक स्वर के दोनों रूप नहीं प्रयोग किये जा सकते।
5. थाट गाया - बजाया नहीं जाता इसलि इसमे वादी सम्वादी पकड़ समय जाति आदि की आवश्यकता नहीं होती।
6. थाट में रन्जकता का होना आवश्यक नहीं हैँ
7. थाट का नाम उसके अर्न्तगत आये कियी प्रसिद्ध राग के नाम पर रखा जाता है।
8. थाट को जनक थाट भी कहा जाता है।
9. थाटों की संख्या 10 मानी जाती है।
10. गणित के आधार पर केवल 72 थाट बन सकते हैं इससे कम या ज्यादा नहीं ।

श्री विष्णु नारायण भात्तखण्डे जी के दय थाट

1. **बिलावल थाट :-** इस थाट में सारे स्वर शुद्ध लगते हैं जैसे स रे ग म प ध नी ।

2. **कल्याण थाट :-** इस थाट में म तीव्र बाकी सभी स्वर शुद्ध लगते हैं जैसे स रे ग म प ध नी।

3. **खमाज थाटः-** इस में नी कोमल बाकी के स्वर शुद्ध लगते हैं जैस स रे ग म प ध नी ।

4. **काफी थाट :-** इसमें ग और नी कोमल बाकी स्वर शुद्ध लगते हैं जैसे स रे ग म प ध नी ।

5. **आसावरी थाट :-** इस थाट में ग ध नी कोमल और बाकी शुद्ध स्वर लगते हैं जैसे स रे ग म प ध नी ।

6. **भैरवी थाटः-** इस थाट में रे ग ध नी कोमल और बाकी शुद्ध स्वर लगते हैं जैसे स रे ग म प ध नी ।

7. **भैरव थाट :-**इस थाट में रे, ध कोमल और बाकी सारे स्वर शुद्ध हैं जैसे स रे ग म प ध नी।

8. **पूर्वी थाट :-**इस थाट में रे, ध कोमल म तीव्र और बाकी स्वर शुद्ध हैं जैसे स रे ग म प ध नी।

9. **मारवा थाटः-**इस थाट में रे कोमल म तीव्र बाकी सारे स्वर शुद्ध लगते हैं जैसे स रे ग म प ध नी।

10. **तोड़ी थाट :-**इस थाट में रे ग ध कोमल म तीव्र बाकी सारे स्वर शुद्ध लगते हैं जैसे स रे ग म प ध नी।

* * * * * *

पाठ-5

जीवन पं. दलीप चन्द्र बेदी

दलीप चन्द्र बेदी का नाम महान गायकों और संगीत शास्त्रकारों में लिया जाता है। इनका जन्म पंजाब के धार्मिक शहर श्री आन्नदपुर साहिब में सन् 1901 ई: में हुआ। बचपन से ही इसकी रूचि संगीत में होने के कारण आपकी संगीत शिक्षा के लिए अमृतसर भेज दिया गया। जहाँ उन्होंने बाकी विषयों के साथ संगीत की शिक्षा ग्रहण की। वहाँ पर लगभग सात वर्ष तक बेदी जी ने धुपद, ख्याल, ठुमरी, भजन आदि की गायन शैली की शिक्ष ग्रहण की और वहीं पर सैंट्रल खालसा यतीम खाने में संगीत की शिक्षा सिखाते रहे।

जब बेदी जी सतरह वर्ष के हुये तो जालन्धर में संगीत महासभा का वार्षिक उत्सव हुआ। वहाँ पर बेदी जी की भेंट पंडित भास्कर राव बखले से हुई और इनकी प्रतिभा को पहचान आपना शिष्य बना लिया और लगभग 21 साल तक पंडित भास्कर जी से ख्याल गायकी की शिक्षा ग्रहण की।

पंडित भास्कर राव जी के स्वर्गवास के बाद बेदी जी ने बड़ौदा के उस्ताद फैयाज खाँ और उस्ताद अलादीया खाँ से संगीत की शिक्षा ली। संगीत शिक्षा के साथ -साथ ही बेदी जी ने पंजाबी, हिन्दी, उर्दू, मराठी, गुजराती, अंग्रेजी और संस्कृत भाषा के अनुवाद ग्रन्थों का अध्ययन किया और अनेक संगीत शास्त्रीयों से वाद-विवादित करके अपने संगीत ज्ञान को बढ़ाते रहे। जिसके फलस्वरूप यह एक सफल गायक के साथ-साथ उच्चकोटि के संगीत शास्त्री भी बने। 1924 ई: में बेदी जी को पटियाला दंरबार की तरफ से आमंत्रित किया गया और वह रियासत के दरबारी गायक बना दिये गये और अगले ही वर्ष लखनऊ में अखिल भारतीय संगीत सम्मेलन हुआ जिसमें आपने भाग लेकर सोने के पदक जीते।

उन्हीं दिनों एक अच्छे कलाकार को पद्मवियाँ देने का चलन था। बेदी जी जैसे महान कलाकार कैसे इस क्षेत्र से पीछे रह सकते थे। कराची में आप ने सिंध संगीत कान्फ्रंस में भाग लिया और महताबे-मौसिकी की उपाधि प्राप्त की। गुरूकुल कांगड़ी से आपकों संगीत श्रृंगार की उपाधि मिली। इसके अतिरिक्त और भी बेदी जी को उपाधियों से सम्मानित किया जैसे संगत महा महोपाध्याय, संगीत नायक, संगीत सुधारक, संगीत रत्न और संगीत प्रवीण आदि।

सन् 1935 में कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर ने बेदी जी को शान्ति निकेतन में आमन्त्रित किया और उस सम के महान गायकों ने आपकी खूब प्रशंसा की। 1971 में इन्हें संगीत नाटक अकादमी की फैलोशिप प्राप्त हुई और संगीत नाटर अकादमी कौंसल में आप पंजाब के प्रतिनिधि भी रहे।

बेदी जी के अनेक शिष्य थे जिनमें कुछ शिष्यों के नाम इस प्रकार हैं। जैसे पं हुस्न लाल, सरदार सोहन सिंह , श्री भगवान दास सौनी, श्री मदन लाल बाली आदि।

बेदी जीं प्रसिद्ध राग इस प्रकार थे : रामकली, देसी, आसावरी, मल्हार तानसेनी, तोड़ी, बागेश्वरी आदि।

पण्डित दिलीप चन्द्र बेदीजी अपने जीवन के अन्तिम दिनों में दिल्ली में रहें। एक लम्बा और सफल जीवन व्यतीत करने के बाद 13 नवम्बर 1992 को इसका देहान्त हो गया।

पंजाब की धरती ने पं. दलीप चन्द्र बेदी के रूप में एक महान संगीतकार और संगीत शास्त्रकार के रूप में एक बहुमुल्य रत्न दिया है। हम सब भारतीयों को इन पर गर्व है।

* * * * *

तानपूरा

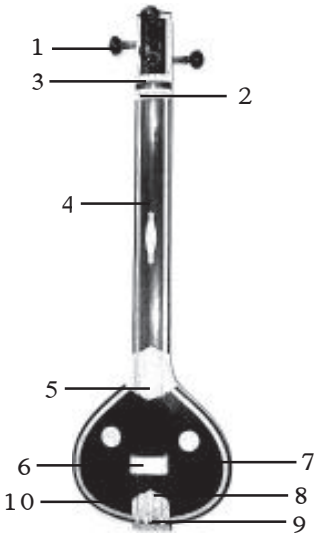

1. खूँटी
2. अट्टी
3. तार गहन
4. तारें
5. गुल्लू
6. घुरच
7. तबली
8. मनका या मोती
9. कील या लंगोट
10. तूंबा

चित्र न. 3

पाठ-6

तानपुरा

तानपुरा एक प्राचीन तन्त्री वाद्य है। शास्त्रीय गायन वादन और नृत्य में सिर्फ स्वर देने के लिये इसका प्रयोग किया जाता है। सिर्फ अकेले गायन में ही इसकी संगत देने के लिये इसको सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। इस वाद्य से कोई स्वर या धुन नहीं निकलती है, इसका प्रयोग तो सिर्फ स्वर-संगत के लिये ही किया जाता है। इसके बारे में कहा जाता है कि इसका अविष्कार तम्बरू नामक गार्न्धव ने किया जिस कारण इस वाद्य को तम्बुरा अथवा तानपुरा कहा जाने लगा।

तानपुरे का अंग वर्णन

1. तूम्बा: - यग लौकी का बना हुगा गोल शकल का होता है। अन्दर से यह खोखला होता है। जिसके कारण इसके स्वर गूँजते है।

2. तबली:- तूम्बे का ऊपरी भाग का जो चपटा होता है और ढक्कन का काम करता है, तबली कहलाता है। यह लकड़ी का बना होता है।

3. घुंच :- यह लकड़ी या हाथी दाँत की बनी एक चौकी होती है। यह तबली के ऊपर लगती होती है। इस पर तानपूरे के चारों तार टिके होते हैं।

4. डांड :- एक लम्बा खोखला गोल लकड़ी का टुकड़ा जो तूम्बे और तबली के साथ जुड़ा होता है, उसे डांड कहते है।

5. गुलू :- जिस स्थान पर तानपुरे का तूम्बा और डांड जुड़े होते हैं गुलू कहलाता है।

6. कील या लंगोट:- तूम्बे के नीचे के भाग में तारों के बाँधने के लिये एक तिकोनी पट्टी होती है। उसे कील या लंगोट कहते हैं।

7. अट्टी या अटक :- तानपुरे के चारों तार की से धुड़च पर होते हुये ऊपर को जाते है। ऊपर की ओर सबसे पहले हाथी दाँत की पट्टी होती है। जिस पर चारों तार रखे जाते हैं इसे अट्टी कहते हैं।

8. तार गहन-तारदान :- अट्टी के साथ ही एक हाथी दाँत की पट्टी लगी होती है। इस में छिद्र होता है। इन्ही में से तार निकाल कर खुँटीयों की तरफ जाते हैं। इसे तार गहन कहते है।

सिरा :- तानपुरे की डांड का ऊपर वाला भाग सिरा कहलाता है। यह भाग तारदान के पिछे होता है। जिसमें तानपुरे की चार खुँटियाँ लगी होती है। जिस में तानपुरे के चारों तार बँधे होते हैं। इनसे तारों को ढीला और कसा जाता है। दो खूँटियां सिरे के ऊपर और दो दूसरी तरफ होती हैं।

मनका :- हाथी दाँत, लकड़ी या काँच के बने मोती जो तारों में धुरच और कील के मध्य में पिरोये जाते है, मनका कहलाता है यह मनके तारों को ढीला और कसने के काम आते हैं, ताकि स्वर मिलाये जा सकें।

सूत या धागा :-धुरच के ऊपर जहाँ तारे रखी जाती है वहीं धागे को दबाया जाता है। इस धागे के ठीक स्थान पर रखे जाने से तानपुरे की झंकार निकलती है।

जवारी :- धुरच की ऊपरी सतह को जवारी कहते हैं।

पत्तियाँ :- सजावट के लिये तुम्बे के ऊपर लकड़की की सुन्दर पत्तियाँ बनाई जाती हैं जिनहे श्रृंगार भी कहा जाता है।

तार :-तानपुरे में चार तार होते हैं। पहला तार लोहे का होता है और मन्द्र पँचम से मिलाया जाता है। दूसरा और तीसरा लोहे का जिसे जोड़ी का तार कहते हैं और यह दोनो मध्य सप्तक के 'स' से मिलाते हैं। चौथा तार पीतल का होता है जो मन्द्र 'स' से मिलाया जाता है ।

'तसपुरे के बजाने' को 'तानुपरे का छेड़ना' कहते हैं।

* * * * * *

पाठ–7

भात्तखण्डे जी की स्वरलिपि

जैसे हिन्दी पंजाबी आदि भाषा में व्याकरण के चिन्हों आदि की सहायता से भाषा को समझा जा सकता है, कि क्या लिखा गया है, ठीक उसी प्रकार संगीत में विशेष चिन्हों की सहायता से संगीत की संगीतक भाषा को उसके चिन्हों से समझा जा सकता है, इन्हीं विशेष चिन्हों के स्वर लिपि कहते है।

भारत में दो प्रकार की पद्धतियों का प्रचलन है।

1. उत्तर भारतीय संगीत पद्धति जो कि विष्णु नारायण भात्तखण्डे जी के नाम से जानी जाती है।

2. दक्षिण भारतीय संगीत पद्धति जो की विष्णु दिगम्बर पद्धति के नाम से जानी जाती है।

विष्णु नारायण भात्तखण्डे पद्धति

1. स्वर चिन्ह	**विवरण , चिन्ह**	**उदाहरण**
(1) शुद्ध स्वर	कोई चिन्ह नहीं	स रे ग
(2) कोमल स्वर	स्वर के नीचे लेटवीं रेखा	रे̱ ग̱
(3) तीव्र स्वर	स्वर के ऊपर खड़ी रेखा	म॑
2. सप्तक चिन्ह		
(4) मध्य सप्तक	कोई चिन्ह नहीं	स रे ग
(5) मन्द्र सप्तक	स्वर के नीचे बिंदु	ऩी ध़ प़

6. तार सप्तक	स्वर के ऊपर बिंदु	नीं धं पं
3. स्वर मान		
7. एक मात्रा	कोई चिन्ह नहीं	स ध
8. आधी मात्रा	उल्टा अर्धचक्र	सध पग
9. एक मात्रा ठहरने के लिए	–	ग–म–
7. एक मात्राा गीत उच्चारण में	ऽ	ग ऽ म ऽ
4. ताल लिपि		
11. सम	x	ध गे न ति |
12. खाली	0	न के धि न
13. विभाग	|	1 2 3 4 |
14. ताली संख्या	2, 3, 4	
15. मात्रा	1, 2, 3, 4	

नोट :- इस पद्धति में और भी चिन्हों का विवरण है। संगीत के नये विद्यार्थियों के लिये इतने काफी हैं ।

पाठ-8

भैरवी राग

थाट - **भैरवी**
वादी - **मध्यम**
संवादी - **षड़ज**
जाजि - **सम्पूर्ण-सम्पूर्ण**
स्वर - **रे ग ध नी**
गायन समय - **प्रात : काल**

संक्षिप्त परिचय :

राग भैरवी भैरवी थाट का आश्रय राग है। इस राग में ऋषभ, गंधार, धवैत अर्थात् रे ग ध नी स्वर कोमल लगते हैं। इस राग में कोई भी स्वर वर्जित न होने के कारण इस की जाति सम्पूर्ण-सम्पूर्ण मानी जाती है। इसका वादी मध्यम संवादी षड़ज है। यह राग रे _ ध कोमल वाले वर्ग के अन्तरर्गत आता है परन्तुयह राग संकीर्ण जाति का होने के कारण गुणीजन सभी प्रयोग कर लेते हैं। इसमें ठुमरी गाई बजाई जाती है। इस लिये इस राग को कभी भी समय गाया बजाया जा सकता है।

आरोह स रे ग म प ध नि सं ।
अवरोह सं नि ध प म ग रे स ।
पकड़ म ग स रे स ध नि स ।

आलाप :-

1. स ---स रे ग-----म---- म प ----- म प ध
   प--- म ग रे स
2. म ग स रे स--- स नि ध----प --- ध नि स रे स
   रे स।

3. म प ध ---ध -- नि ---ध प ---म ----ग---स रे स ध नि
स रे स ।

4. ग म प ध ध प --- ग म ध नि सं नि ध प -- म --- ध़ नि ध़
प - -म ग़ स रे स ध़ नि़ स - -

राग भैरवी छोटा ख्याल मध्य लय तीन ताल

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
स	ध	प	ध	म	प	ग	म	प	–	ग	म	ग	रे	स	–
बा	ऽ	ट	च	ल	त	मो	हे	रो	ऽ	के	क	न्है	इ	या	ऽ
म	ग	स	रे	ध	नि	स	स	ग	म	प	म	ग	रे	सा	–
बि	न	ती	क	र	त	न	हि	मा	ने	नि	र	द	ई	या	ऽ
								अंतरा							
ग	म	ध	नि	सं	सं	सं	सं	नि	सं	रें	सं	नि	नि	ध	प
बा	ऽ	र	बा	ऽ	र	उ	ल	ह	न	दे	के	हा	ऽ	री	ऽ
स	रे	ग	रे	सं	नि	ध	म	प	–	ग	म	ग	रे	स	–
ब	र	ज	त	ना	ऽ	हि	य	शे	ऽ	दा	ऽ	म	ई	या	ऽ
								तानें							
बा	ऽ	ट	च	ल	त	मो	हे	1. गम	पम	धप	मप	गम	पम	गरे	स –
								2. मग	सरे	धनि	सरे	गम	पम	गरे	स –
3.															
बा	ऽ	ट	च	ल	त	मो	हे	रो	ऽ	के	क	न्है	इ	या	
सरे	गम	पध	पम	गम	धनि	धप	मप	मप	धनि	संनि	धप	नि ध	पम	ग रे	सा –

राग भैरवी (शब्द)

ऊठत सुखिया बैठत सुखीया॥ भऊ नहीं लागै जा जैसे बूझिया॥१॥ राखा एक हमारा स्वामी॥ सगल घटा का अंतरजामी॥ रहाऊ॥ सोये अचिंता जागि अचिंता। जहां कहा प्रभु तू वरतंता॥२॥ घरि सुख वसया, बाहरि सुख पाया॥ कहो नानक गुर मंत्र दृिढाया॥३॥२॥

स्थाई				राग भुपाली								ताल-तीन ताल			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
								स	ग	प	म	रे	स	ध	नी
								रा	ऽ	खा	ऽ	ए	ऽ	क	ऽ
स	–	रे	स	म	ग	रे	स	स	रे	ग	म	प	ध	प	–
ह	मा	रा	ऽ	सु	आ	भी	ऽ	स	ग	ल	घ	टा	ऽ	का	ऽ
संस	नी	ध	प	गम	पम	गऽ	स								
अंऽ	ऽ	त	र	जा	ऽऽ	मीऽ	ऽ								
अंतरा															
								म	ग	म	–	ध	ध	नी	–
								ऊ	ऽ	ठ	त	सु	खी	आ	ऽ
सं	संस	सं	सं	रे	नी	सं	–	सं	रे	सं	नी	ध	नी	ध	प
बै	ऽऽ	ठ	त	सु	खि	या	ऽ	भ	ऊ	न	ही	ल	ऽ	रो	जा
ग	म	प	म	गम	पम	गारे	सा								
औ	ऽ	सौ	ऽ												

(शेष अन्तरे पहले अन्तरे के समान गाइए)

पाठ-9

खमाज राग

थाट - खमाज
वादी- गंधार (ग)
संवादी -निषाद (नि)
जाती - षाड़व सम्पूर्ण
गायन - समय-रात्रि का दूसरा पहर

संक्षिप्त परिचयः

राग खमाज, खमाज थाट का आश्रय राग है। आरोह में शुद्ध निषाद और अवरोह में कोमल निषाद लगता है। आरोह में वर्जित होने के कारण इस राग की जाति षाड़व-सम्पूर्ण मानी गई है। इसका वादी गंधार तथा संवादी निषाद है। इसका गायन समय रात्रि का दूसरा पहर है। इस राग में सभी चीजें गई बजाई जाती है। इसका समप्रकृतिक राग झिझोटी है।

आरोह स ग म प नि सं
अवरोह सं नि ध प म ग रे स
पकड़ ग म प नि ध म प ग - ग

आलाप :- 1. स ग - - - म म - - -ग म प - - - म ग म ग रे स।
2. ग म प नि - - - ध म प - - - ध नि ध म प ग म ग रे स ।

गीत

स्थाई :- हरि चरण चित ला रे मनुवा
मन के अंदर श्याम मूरति।
रख के अति सुख पा रे मनुवा
अंतराः- मुरल धर की महिमा न्यारी
उनके गुण नित गा रे मनुवा ।

राग खमाज (छोटा ख्याल) मध्य लय (रूपक ताल)

स्थाई

0	1	2	0	1	2
नि सं नि	ध प	म प	ग – ग	ग रे	स –
ह रि च	र ण	चि त	ला ऽ रे	म नु	वा ऽ
ग म प	ध प	म प	ध नि ध	नि ध	प म
म न के	अं ऽ	द र	श्या ऽ म	मू ऽ	र ति
नि सं नि	ध प	म प	ग म ग	रे रे	स –
र ख के	अ ति	सु ख	पा ऽ रे	म नु	बा ऽ

अंतरा

ग म प	नि ध	नि नि	सं सं सं	नि रें	सं –
मु र ली	ध र	की ऽ	म हि मा	न्या ऽ	री ऽ
नि सं नि	ध प	म प	ग – म	ग रे	स –
उ न के	गु ण	नि त	ग ऽ रे	म नु	वा ऽ
x	2	3	x	2	3

तानें

ह रि च र ण 1. गम पम धप मप धनि धप मप मग रेस

ह रि 2. गम पम गम गम पनि धप धनि धम गम पनि धप मग

राग खमाज (शब्द)

कवन संजोग मिलयो प्रभ अपने॥ पल पल निमख सदा हर जपने॥ चरन कमल प्रभ के नित ध्यावो॥ कवन सूमति जित प्रीतम पावौ॥ रहाऊ॥ ऐसी कृपा कर हो प्रभ मेरे॥ हरि नानक बिसर न काहू बेरे।

स्थाई **राग खमाज** **तीन-ताल**

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
								प	सं	नी	सं	नी	ध	म	प
								क	व	न	सं	जो	-	ग	मि
नी	ध	म	प	ध	म	ग	-	स	स	ग	ग	म	प	ध	नी
लपो	ऽ	प्र	भ	अ	प	ने	ऽ	प	ल	प	ल	नि	म	ख	स
स	-	नी	स	नी	ध	म	ग								
दा	ऽ	ह	रि	ज	प	ने	ऽ								

अंतरा

								म	म	ध	ध	नी	नी	सं	सं
								च	र	न	क	म	ल	प्र	भ
सं-	नी	सं	सं	नीसं		रेसं	नीध	सं	सं	रे	ग	नी	ध	म	प
के	ऽ	नी	त	ध्या	ऽऽ	वो	ऽ	क	व	न	सु	म	ति	जि	त
नी	ध	म	प	ध	म	ग	-								
प्री	ऽ	त	म	पा	वौ	ऽ	ऽ								

(शेष अन्तरे पहले अन्तरे के समान गाइए)

पाठ -10

ताल

एक ताल

ताल की जान- पहचान: एक ताल की बारह मात्राएं होती है। ताल की दो-दो मात्रा के छः विभाग होते है। इस ताल की पहली मात्रा पर सम या पहली ताली , 5वीं मात्राा पर दूसरी ताली, 9वीं मात्राा पर तीसरी ताली, 11वीं मात्रा पर चौथी ताली, तीसरी और सातवीं मात्राा पर खाली मानते हैं। इस ताल का प्रयोग बिलम्बिल (बड़े) और द्रुत (छोटे) ख्याल के साथ किया जाता है।

मध्य लय **एक ताल** **एक गुन**

मात्रा	1 2	3 4	5 6	7 8	9 10	11 12
ताल के बोल	धीं धीं	धागे तिरकट	तू ना	क ता	धागे तिरकिट	धी ना
ताली चिन्ह	x	0	2	0	3	4

झपताल

ताल की ज्ञान- पहचान

झप ताल की 10 मात्राएं होती है। इस ताल की मात्राओं को चार विभागों में बांटा जाता है। इन में से पहला और तीसरा विभाग दो- दो मात्राओं का तथा दूसरा और चौथा विभाग तीन- तीन मात्राओं का होता है। इस की पहली मात्राा पर सम जा पहली ताली, तीसरी मात्रा पर दूसरी ताली, 8वीं मात्रा पर तीसरी ताली तथा छेवीं मात्रा पर खाली होती है। यह ताल ख्याल गीत के साथ अधिक बजाया जाता है।

मध्य लय	**एक ताल**	**एक गुन**	
मात्रा	1 2	3 4 5	6 7	8 9 10
ताल के बोल	धीं ना	धीं धीं ना	तीं ना	धी धीं ना
ताली चिन्ह	x	2	0	3

पाठ-11

लोक गीत पंजाबी

शहीद भगत सिंह की घोड़ी

1. आवो नी भैणें रल गवीए घोड़ीआं
2. मौत कुड़ी नू परनावन चलिआ
   देश भगत सरदार वे हां
3. फांसी दे तख्ते वाला खारा बणा के
   बैठा तू चौकड़ी मार वे हां
4. फांसी दी टोपी वाला सेहरा बणा के
   सेहरा तूँ बद्धा झालर दार वे हां
5. जंडी ते वढ्ढी लाड़े जोर जुलम दी
   सबर दी मार तलवार वे हां
6. राजगुरू ते सुखदेव सरबाले
   चढ़िआ ते तूँ वी विचकार वे हां
7. वाग फड़ाई तैं थों भैणं ने लेणी
   भैणां दा रखिआ उधार वे हां
8. हरकृष्ण तेरा बणिआं वे सांडू
   ढुक्के ते तुस्सी इक्को वार वे हां
9. पैंती करोड़ तेरे जांजी वे लाड़िआ
   पैदल ते कई असवार वे हां
10. कालीआं पोशाकां पाके जंज जे तुर पई
    डायर भी होइआ ए तिआर वे हां

स्वर लिपि (लाल कहरवा) दुगुन

1	2	3	4	5	6	7	8
–	स	रे	म	मग	रेग	रेस	स
ऽ	आ	वो	नी	भैऽ	णेंऽ	रऽ	ल
–	रेग	रे	स	रे	रे	रे	–
ऽ	गाऽ	वि	ए	घो	ड़ी	आँ	ऽ
–	स	रे	म	मग	रेग	रेग	स
ऽ	जं	ज	ते	होऽ	ईऽ	एऽ	तिऽ
–	रेग	रे	स	स	–	–	–
ऽ	आऽ	र	वे	हां	ऽ	ऽ	ऽ

(शेष अन्तरे पहले अन्तरे के समान)

लोक-गीत (पहाड़ी)

स्थाई — इस वे बरोटे दीआं छांवां छांवां
पल भर बई जांणां बई जांणां हो
रातीं रही जांणां रही जांणां हो

अन्तरा (1) — हरि पुर नूर ठंढीआं ने छांपां
जित्थे वे बलोचां दा ठांणां ठांणां
पल भर

(2) — चिट्टे चिट्टे चौल ते दुद्ध बे गई दा
ए है बलोचां दा खांणां खांणां
पल भर

(3) — सद्दीं वे सिपाहीआ पुच्छीं वे राजेआ
ऐ है बलोचां दा ठांणां ठाणां

(4) — लम्बे लम्बे टोपू छोटे- छोटे चोलू
ऐ है बलोचां दा लांणां जांणां
पल भर

स्थाई स्वर लिपि (ताल दादरा)

धनु	स्थाई		द्रुत लय
1 2 3	4 5 6	1 2 3	4 5 6
×	0	×	0
धध ध ध	ध ध धप	मप प धप	मरे रेप मम
इस बे ब	रो टे दीआं	छांऽ वां छांऽ	वांऽ इक पल
गग स रे	सध स रे	म – – ग	रे रेप म
बई जां णां	बई जां णां	हो ऽ ऽऽ	ऽ राऽ तीं
गग स रे	सध स रे	म – –	– – –
रही जां णां	रही जां णां	हो ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ

अन्तरा

1 2 3	4 5 6	1 2 3	4 5 6
×	0	×	0
सम स रे	सस स स	सध ध म	मध प –
हरि पु र	नूर पु र	ठंढी आं ने	छांऽ वां ऽ
पप प प	प प पम	पध ध म	रे रेप मम
जित्थे वे ब	लो चां दाऽ ठांऽ णां ठां णां पल भर		
गग स रे	धध स रे	म – – ग	रे रेप म
बई जां णां	बई जां णां	हो ऽ ऽऽ	ऽ राऽ तीं
गग स रे	धध स रे	म – –	– – –
रही जां णां	रही जां णां	हो ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ

(शेष अन्तरे पहले अन्तरे के समान गाइए)

पाठ–12

छठी, सातवीं और आठवीं के पाठ्यक्रम की सब तालों की दुगुन

ताल दादरा (दुगुन)

1	2	3	4	5	6
धाधी	नाधा	तीना	धाधी	नाधा	तीना
×				0	

ताल कहरावा (दुगुन)

1	2	3	4	5	6	7	8
धागे	नाति	नके	धिना	धागे	नाति	नक	धिना
×				0			

ताल रूपक (दुगुन)

1	2	3	4	5	6	7
तींतीं	नाधी	नाधी	नाती	तींना	धींना	धींना
0			1		2	

झप ताल दुगुन

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
धींना	धींधीं	नाती	नाधी	धीनां	धींना	धींधी	नाती	नाधीं	धींना
×		2			0		3		

एक ताल (दुगुन)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
धीधी	धागे तिरकिट	तुना	कत्ता	धागे तिरकिट	धीनां	धीधी	धागे तिरकिट	तूना	कत्ता	धागे तिरकट	धीनां
×		0		2		0		3		4	

तीन ताल (दुगुन)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
धाधीं	धींधां	धाधीं	धींधा	धातीं	तींता	ताधीं	धींधा	धाधीं	धींधां	धाधीं	धीधां	धातीं	तींता	ताधीं	धींधा
×				2				0				3			

पाठ–13

रागों का चार्ट

राग का नाम	थाट	वादी	संवादी	वजित स्वर	आरोह	अवरोह	पकड़	गाने का समय	परिचय
1. भुपाली	कल्यान	ग	ध	म, नी	स रे ग प ध सां ।	सा ध प ग रे स ।	ग रे प ग ध प ग, रे ध़ स	रात्रि का पहला पहर	इस राग मे म, नी स्वर वर्जित इसलिए इस राग की जाति औड़व –औड़व है।
2. दुरगा	बिलावल	म	स	ग, नी	स रे म प ध सं	सं ध प म रे स	स रे म प ध, म रे, ध़ स	रात का दूसरा पहर	इस राग में ग, नी स्वर वर्जित हैं, इसलिए इस राग की जाति औड़व–औड़व है।
3. खमाज	खमाज	ग	नी	आरोह मे रे	स ग म प ध नी स	सं नी ध म प म ग, रे स	नी ध म प ध, म ग	रात्रि का दूसरा पहर	इस राग के आरोह में ऋषभ रे वर्जित है अवरोह में पूरे स्वर लगते हैं, इसलिए इस राग की जाति षाड़व–सम्पूर्ण है।
4. भैरवी	भैरवी	मा	सा	–	सा रे ग म प ध नी सां	सां नी ध प म ग रे सा	म ग रे ग सरे सध नी सा।	प्रातः काल पहला पहर	इस राग में रे ग ध नी स्वर कोमल लगते है। इस राग की जाति सम्पूर्ण–सम्पूर्ण है।